झारखण्ड

सहायक आचार्य (पारा कोटि)

झारखण्ड कर्मचारी चयन आयोग (JSSC)

भाग - 5

(कक्षा 1 से 5)

झारखंड का सामान्य ज्ञान एवं कंप्यूटर

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	झारखंड बुनियादी जानकारी	1
2	प्राचीन इतिहास	6
3	मध्यकालीन इतिहास	14
4	विद्रोह और बगावत	19
5	स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन (1900–1947)	27
6	आधुनिक इतिहास	36
7	एक पृथक राज्य का गठन	45
8	भौगोलिक विशेषताएँ	50
9	जलवायु	57
10	अपवाह तंत्र	61
11	प्राकृतिक वनस्पति	69
12	राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभयारण्य और अन्य	76
13	कृषि और संबद्ध क्षेत्र	82
14	मृदा	95
15	खनिज संसाधन	99
16	उद्योग	107
17	ऊर्जा संसाधन	121
18	परिवहन और संचार	126
19	जनसांख्यिकीय रुपरेखा	135
20	कला और वास्तुकला	141
21	मेले और त्योहार	146
22	संगीत, नृत्य और नाटक	154
23	भाषा और साहित्य	163

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	झारखंड की जनजातियां	171
25	राज्यपाल	187
26	झारखंड विधानमंडल	190
27	मुख्यमंत्री	196
28	मंत्रिपरिषद	198
29	न्यायपालिका	200
30	संवैधानिक और गैर–संवैधानिक निकाय	205
31	स्थानीय स्वशासन	213
32	झारखंड बजट 2026–27	220
33	खेल	228
34	झारखंड के महत्वपूर्ण व्यक्तित्व	237
35	कंप्यूटर	239

1 CHAPTER झारखंड: बुनियादी जानकारी

मूलभूत जानकारी

विवरण	जानकारी
स्थापना	15 नवंबर, 2000
स्थापना दिवस	15 नवंबर
राजधानी	रांची
उप-राजधानी	दुमका
कुल जिले	24
सबसे बड़ा शहर	जमशेदपुर
जनसंख्या	3,29,88,134
भारत में जनसंख्या की दृष्टि से राज्य का स्थान	15वाँ
उच्च न्यायालय	रांची
राजकीय भाषा	हिंदी
द्वितीय राजकीय भाषा	उर्दू
अन्य भाषाएँ	संथाली, बांग्ला, मुंडारी, कुड़ुख, हो, नागपुरीया, खोरठा, पंचपरगनिया

राज्य की सीमाएँ

एक भू-आबद्ध राज्य होने के कारण, झारखंड पाँच राज्यों से घिरा हुआ है:

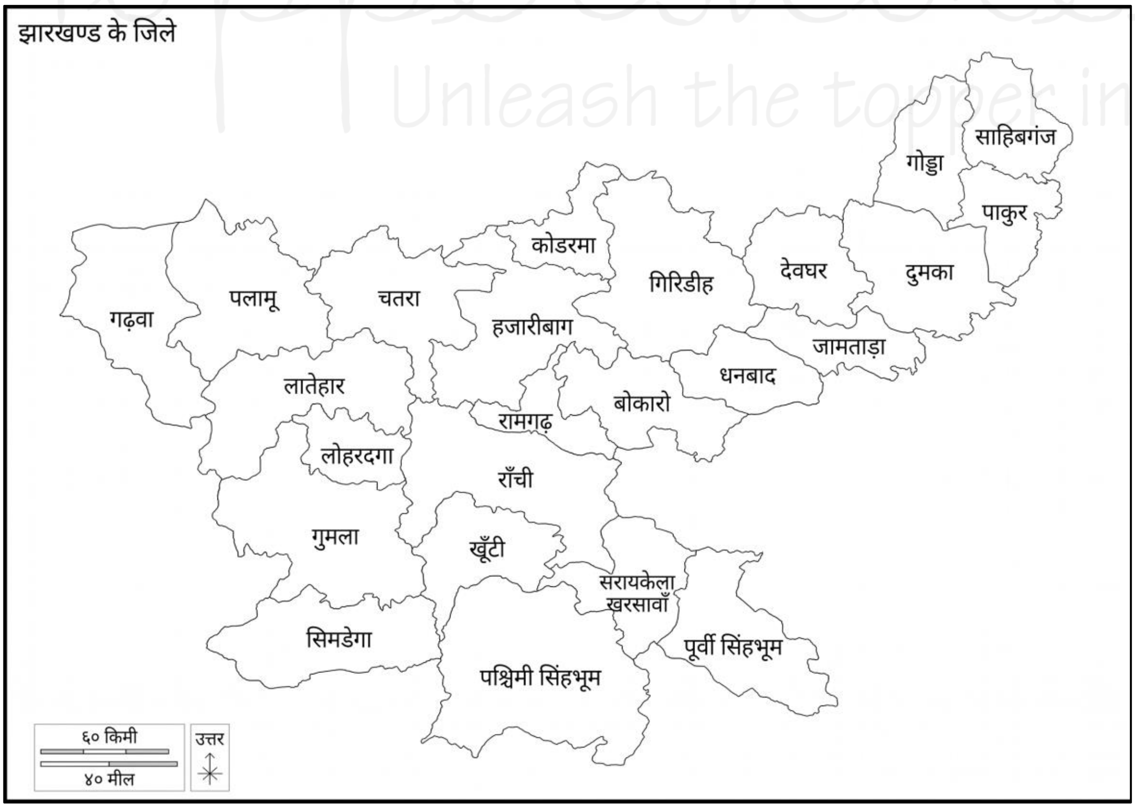

राज्य	झारखंड की सीमा से सटे जिले
उत्तर प्रदेश	1 जिला: गढ़वा
छत्तीसगढ़	4 जिले: गढ़वा, लातेहार, गुमला, और सिमडेगा
ओडिशा	4 जिले: सिमडेगा, पश्चिम सिंहभूम, सारायकेला-खरसावाँ, पूर्व सिंहभूम
बिहार	10 जिले: गढ़वा, पलामू, छत्रा, हज़ारीबाग, कोड़रमा, गिरिडीह, देवघर, डुम्का, गोड्डा, साहिबगंज
पश्चिम बंगाल	10 जिले: साहिबगंज, पाकुर, डुम्का, जमताड़ा, धनबाद, बोकारो, रामगढ़, रांची, सारायकेला-खरसावाँ, पूर्व सिंहभूम

भौगोलिक परिचय	
भौगोलिक स्थिति	भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित
अक्षांशीय विस्तार	$21^0$58' उत्तरी अक्षांश से 25^0 18' उत्तरी अक्षांश तक
देशांतर विस्तार	83^0 22' पूर्वी देशांतर से 87^0 57' पूर्वी देशांतर तक
राज्य की ज्यामितीय आकृति	चतुर्भुजाकार
क्षेत्रफल	79,710 वर्ग किमी
भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में राज्य का हिस्सा	2.42%
राज्य की लंबाई	463 किमी (पूर्व से पश्चिम)
राज्य की चौड़ाई	380 किमी (उत्तर से दक्षिण)
राज्य से गुजरने वाली अक्षांशीय रेखा	कर्क रेखा (रांची एवं गुमला से होकर गुजरती है)

कर्क रेखा का विस्तार

कर्क रेखा झारखंड के मध्य क्षेत्र से होकर गुजरती है, और इसके मार्ग में किस्को, ओरमांझी, गोला, गोपालपुर, मुर्हू, सुदी, पोखन्ना, झलहरड़ा, गोसाईदिह, और पलकुड्री जैसे स्थान आते हैं।

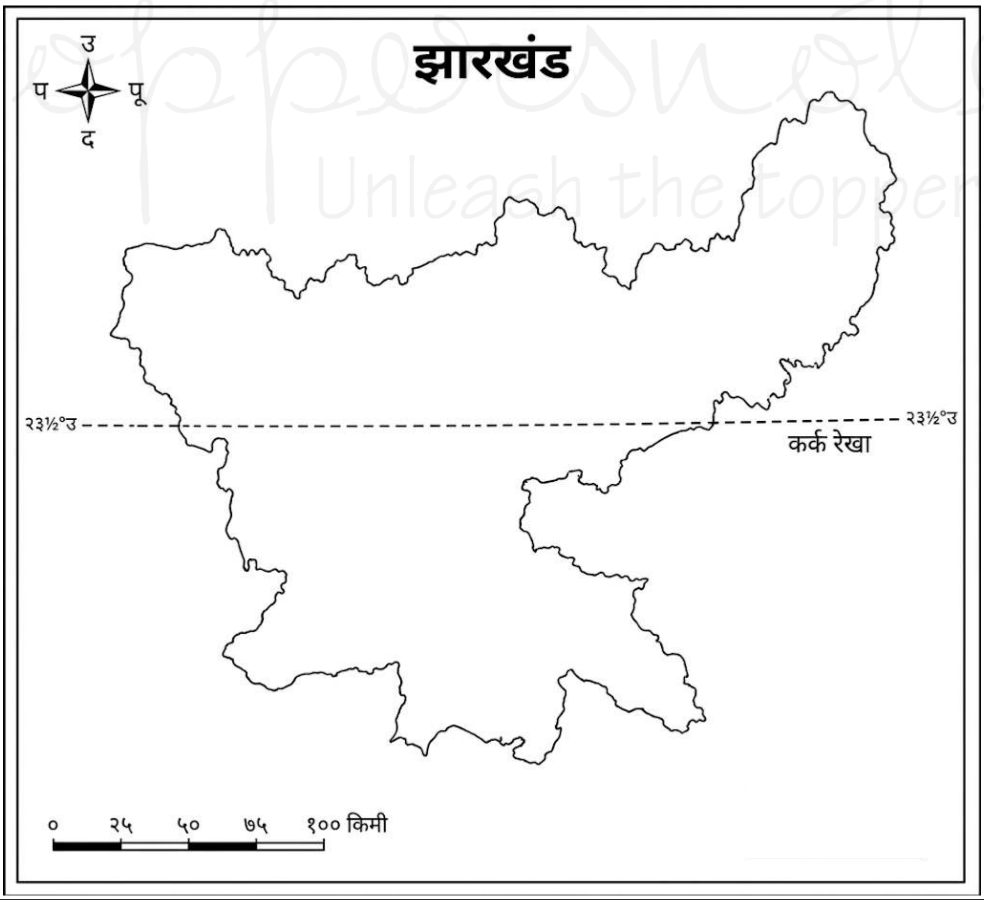

राज्य प्रतीक

प्रतीक	नाम	
राज्य पशु	➢ **एशियाई हाथी (एलिफस मैक्सिमस) -** एलिफस वंश की एकमात्र जीवित प्रजाति है, जो भारत से लेकर बोर्नियो तक दक्षिण-पूर्व एशिया में पाई जाती है। ➢ एशियाई हाथी एशिया के सबसे बड़े जीवित स्थलीय प्राणी हैं।	
राज्य पक्षी	➢ **एशियाई कोयल (यूडाइनामिस स्कोलोपेसस)** - कुक्कू कुल (कुकुलिडे) की सदस्य है, जो भारतीय उपमहाद्वीप, चीन एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में पाई जाती है। ➢ एशियाई कोयल अपने अंडे कौओं एवं अन्य पक्षियों के घोंसलों में देती है, जो उसके बच्चों का पालन-पोषण करते हैं। अन्य कोयलों के विपरीत, यह वयस्क अवस्था में मुख्यतः फलाहारी होती है।	
राज्य पुष्प	➢ **पलाश (ब्यूटिया मोनोस्पर्मा)** जिसे सामान्यतः **'फ्लेम ऑफ द फॉरेस्ट'** अथवा **'बास्टर्ड टीक'** कहा जाता है। ➢ यह भारतीय उपमहाद्वीप एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का मूल पौधा होता है।	
राज्य वृक्ष	➢ **साल (शोरिया रोबस्टा),** जिसे सखुआ अथवा शाला भी कहा जाता है, यह डिप्टेरोकार्पेसी कुल का एक वृक्ष है। ➢ यह भारतीय उपमहाद्वीप का मूल वृक्ष है, जो हिमालय के दक्षिण में म्यांमार, नेपाल, भारत एवं बांग्लादेश तक पाए जाते है।	
राज्य प्रतीक चिह्न	➢ झारखंड की राज्य मुहर में **चार 'J' अक्षर** होते हैं जो एक वर्ग बनाते हैं, और इसके अंदर **अशोक चक्र रखा होता** है। **'J' अक्षर हरे रंग के** हैं, और अशोक चक्र की रूपरेखा नीली है।	झारखण्ड सरकार

जनसांख्यिकी

विवरण	जानकारी
जनसंख्या	3,29,88,134 (देश में 14वाँ स्थान)
पुरुष जनसंख्या	1,69,30,315
महिला जनसंख्या	1,60,57,819
शहरी जनसंख्या	79,33,061
शहरी पुरुष जनसंख्या	41,53,829

शहरी महिला जनसंख्या	37,79,232
ग्रामीण जनसंख्या	2,50,55,073
ग्रामीण पुरुष जनसंख्या	1,27,76,486
ग्रामीण महिला जनसंख्या	1,22,78,587
जनसंख्या घनत्व	414 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
दशकवार जनसंख्या वृद्धि दर	22.42% (2001–2011)
भारत की कुल जनसंख्या में प्रतिशत भाग	2.72% (2011)
लिंगानुपात	949 (देश में 18वाँ स्थान)
साक्षरता दर	66.4% (देश में 31वाँ स्थान)
पुरुष साक्षरता दर	76.8%
महिला साक्षरता दर	55.4%
अनुसूचित जनजाति (ST) जनसंख्या	86,45,042
अनुसूचित जाति (SC) जनसंख्या	39,85,644

प्रशासनिक संरचना

विधानमंडल	एकसदनीय
विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र	82 (81 निर्वाचित, 1 नामांकित)
अनुसूचित जनजाति हेतु आरक्षित सीटें	28
अनुसूचित जाति हेतु आरक्षित सीटें	09
लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र	14 (ST-05, SC-01)
राज्यसभा सीटें	6
सबसे बड़ा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र	सिंहभूम
सबसे छोटा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र	चतरा
कुल जिले	24
कुल प्रमंडल	5
राज्य गठन के समय जिले	18
राज्य गठन के बाद नवगठित जिले	6 (लातेहार, जामताड़ा, सिमडेगा, खूंटी, सरायकेला-खरसावां, रामगढ़)
उप-प्रभाग	45
प्रखंड	264
उच्च न्यायालय	रांची (भारत का 21वाँ उच्च न्यायालय)

झारखंड में प्रथम

प्रथम राज्यपाल	प्रभात कुमार
प्रथम मुख्यमंत्री	बाबूलाल मरांडी
प्रथम नेता प्रतिपक्ष	इंदर सिंह नामधारी
प्रथम विधानसभा अध्यक्ष	स्टीफन मरांडी
प्रथम महिला कैबिनेट मंत्री	जोबा माझी
प्रथम उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश	विनोद कुमार गुप्ता
प्रथम मुख्य सचिव	विजय शंकर दुबे

प्रथम पुलिस महानिरीक्षक	शिवाजी मोहन कैरे
प्रथम महाधिवक्ता	एम. एम. बनर्जी
प्रथम परमवीर चक्र पुरस्कार प्राप्तकर्ता	अल्बर्ट एक्का
प्रथम अशोक चक्र पुरस्कार प्राप्तकर्ता	रणधीर प्रसाद वर्मा
प्रथम अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी	सावित्री पूर्ति
प्रथम झारखंड लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष	फटिकचंद्र हेंब्रम
प्रथम विधानसभा के नामांकित सदस्य	जोसेफ पाचेली गाल्स्टाउन
प्रथम तांबा संयंत्र	घाटशिला
प्रथम सीमेंट कारखाना	जपला
प्रथम विश्वविद्यालय	रांची विश्वविद्यालय
प्रथम कृषि विश्वविद्यालय	बिरसा कृषि विश्वविद्यालय
प्रथम मेडिकल कॉलेज	राजेंद्र मेडिकल कॉलेज (वर्तमान में राजेंद्र आयुर्विज्ञान संस्थान)
प्रथम डिग्री कॉलेज	सेंट कोलंबा कॉलेज
प्रथम दैनिक हिंदी समाचार पत्र	राष्ट्रीय भाषा
प्रथम अंग्रेजी समाचार पत्र	डेली प्रेस
प्रथम फिल्म	आक्रांत
प्रथम संथाली फिल्म	मुख्य ब्राहा
प्रथम विद्युत गृह	तिलैया
झारखंड आंदोलन के अग्रदूत	जे. बर्थोमन

भारत एवं विश्व में झारखंड का प्रथम स्थान	
भारत का प्रथम इस्पात कारखाना	जमशेदपुर (1907)
भारत का प्रथम सबसे बड़ा उर्वरक संयंत्र	सिंदरी (1951)
भारत का प्रथम बड़ा विस्फोटक उत्पादन कारखाना	गोमिया
एशिया का प्रथम मीथेन गैस कुआँ	परबतपुर (बोकारो)
भारत का सबसे बड़ा लौह एवं इस्पात कारखाना	बोकारो
विश्व का सबसे बड़ा लाख निर्यात केंद्र	तोरी (लातेहार)

विविध	
राज्य का प्रथम तांबा संयंत्र	घाटशिला
राज्य का सबसे ऊँचा जलप्रपात	बूढ़ाघाघ या लोध जलप्रपात
राज्य की सबसे ऊँची चोटी	पारसनाथ
राज्य की सबसे ठंडी चोटी	नेतरहाट
काला हीरा का नगर	धनबाद
खनिजों का भंडार गृह	छोटानागपुर
राज्य में सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करने वाला स्थान	नेतरहाट
राज्य का शिमला	रांची
राज्य का स्टील सिटी	जमशेदपुर (टाटानगर)
राज्य की सबसे बड़ी नदी घाटी परियोजना	दामोदर घाटी परियोजना

Unleash the topper in you

2
CHAPTER

प्राचीन इतिहास

सामान्य परिचय

- झारखंड का प्राचीन इतिहास प्रागैतिहासिक काल से शुरू होता है, जब प्राचीन जनजातियाँ इस क्षेत्र के जंगलों और पहाड़ी क्षेत्रों में रहती थीं।
- प्राचीन काल में, झारखंड पर कई जनजातीय समूहों के साथ-साथ अन्य प्रसिद्ध राजवंशों का शासन रहा था।
- **"झारखंड"** नाम दो शब्दों से बना है: **"झार"**, जिसका अर्थ है जंगल, और **"खंड"**, जिसका अर्थ है भूमि का एक हिस्सा। इसलिए, झारखंड का शाब्दिक अनुवाद **"जंगलों की भूमि"** है।
- इस क्षेत्र का सबसे प्रारंभिक उल्लेख **ऐतरेय ब्राह्मण** में मिलता है, जहाँ इसे **"पुंड"** या **"पुंड्र"** कहा गया है। **महाभारत के दिग्विजय पर्व** में इस क्षेत्र को **"पुंडरीक देश"** कहा गया है।
- **"झारखंड"** शब्द का पहला ऐतिहासिक उल्लेख **13वीं शताब्दी** के एक ताम्रपत्र शिलालेख में मिलता है। इसके अलावा, "झारखंड" शब्द का **उल्लेख कबीर दास के दोहों और मलिक मोहम्मद जायसी के पद्मावत में भी मिलता है।**

झारखंड के प्राचीन इतिहास के स्रोत

झारखंड के प्राचीन इतिहास के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करने वाले ऐतिहासिक साक्ष्यों के कई स्रोत हैं। इन स्रोतों में शामिल हैं:

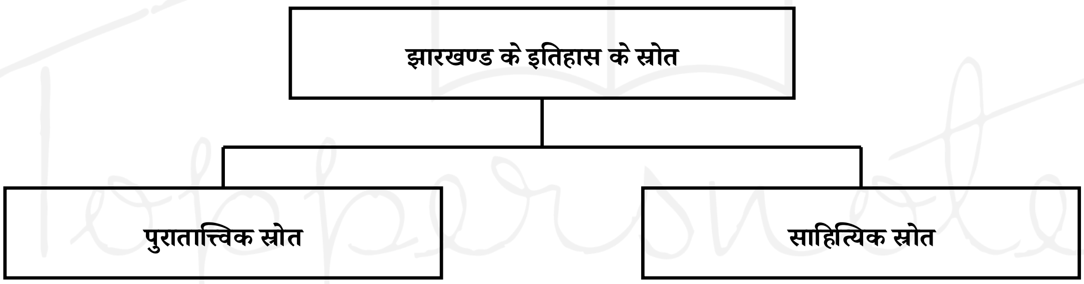

पुरातात्विक स्रोत

- **तांबे के औजार, आभूषण, पत्थर के औजार, सिक्के, मूर्तियाँ** आदी जैसी पुरातात्विक खोजें इस क्षेत्र के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं। ये खोजें लगभग **1,00,000 ईसा पूर्व** की मानी जाती हैं।

शिलालेख

सारिडकेल ब्राह्मी अभिलेख (खूंटी), कबराकलां ब्राह्मी अभिलेख (पलामू), दूधपानी अभिलेख (पूर्वी सिंहभूम) तथा कमलेश्वरी का विष्णुगुप्त अभिलेख (चतरा) जैसे कई महत्वपूर्ण अभिलेख झारखंड में घटित ऐतिहासिक घटनाओं का प्रामाणिक विवरण प्रदान करते हैं।

झारखंड में पाए गए कुछ महत्वपूर्ण शिलालेख:

अभिलेख का नाम	**काल**	**जिला**
बेलिनिगढ़ अभिलेख	चौथी–पाँचवीं शताब्दी ईस्वी	गोड्डा
चांडिल अभिलेख	आठवीं–नौवीं शताब्दी ईस्वी	पूर्वी सिंहभूम
पट कुम अभिलेख	आठवीं–नौवीं शताब्दी ईस्वी	पूर्वी सिंहभूम
महेन्द्रपाल इटखोरी अभिलेख	नौवीं–दसवीं शताब्दी ईस्वी	पूर्वी सिंहभूम

सिक्के

- **कुषाण साम्राज्य** के सिक्के, जो पहली और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के हैं, **झारखंड के रांची, मयूरभंज और सिंहभूम** जिलों में खोजे गए हैं।
- सिंहभूम से प्राप्त रोमन सिक्के इस बात का प्रमाण हैं कि उस समय झारखंड का विदेशी व्यापार से संबंध था। इसके अतिरिक्त, **चाईबासा** में इंडो-स्किथियन सिक्के भी प्राप्त हुए हैं।

मूर्तियाँ

- **हजारीबाग जिले के दुमदुमा** में **पाल राजवंश** की मूर्तियों के साथ-साथ 8वीं से 11वीं शताब्दी ईस्वी के पत्थरों के अवशेष और 'शिवलिंग' पाए गए हैं।
- **सिंहभूम** में 7वीं-8वीं शताब्दी ईस्वी की हिंदू और जैन देवी-देवताओं की मूर्तियाँ मिली हैं।
- बुद्ध की मूर्तियाँ **धनबाद और हजारीबाग** में विभिन्न स्थानों पर प्राप्त हुई हैं, जबकि **जैन मूर्तियाँ पलामू और कंसावती नदी** के पास पाई गई हैं।

चित्रकारी/भित्तिचित्र

- 1991 में हजारीबाग के कई स्थलों पर **प्रागैतिहासिक चित्रों** की खोज की गई।
- **पलामू जिले के भवनाथपुर** क्षेत्र की गुफाओं में **शिकार की गतिविधियों** को दर्शाने वाले चित्र प्राप्त हुए हैं।
- **हजारीबाग जिले के इस्को** में आदिम लोगों द्वारा बनाई गई पेंटिंग, साथ ही एक प्राचीन **सूर्य मंदिर और गुफा** के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

साहित्यिक स्रोत

झारखंड के साहित्यिक स्रोतों को **धार्मिक और गैर-धार्मिक साहित्य** में वर्गीकृत किया जा सकता है।

धार्मिक साहित्य

धार्मिक ग्रंथों में झारखंड का वर्णन इस प्रकार किया गया है:

- महाभारत में झारखंड को **पशुभूमि** और **पुंडरीक देश** कहा गया है।
- प्राचीन काल में **संथाल परगना** के क्षेत्र को **नारीखंड** और बाद में कंकजोल के नाम से जाना जाता था।
- प्रारंभिक संस्कृत साहित्य में, छोटा नागपुर को **कलिंग देश** कहा गया है।
- **भागवत पुराण** में झारखंड को **किक्कट प्रदेश** के नाम से जाना जाता है।
- **विष्णु पुराण** में झारखंड को **'मुंड'** और **वायु पुराण** में इसे **'मुरुंड'** कहा गया है।

गैर-धार्मिक साहित्य

गैर-धार्मिक ग्रंथों में झारखंड का वर्णन इस प्रकार है:

- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपनी कृति **सी-यू-की** में झारखंड के राजमहल क्षेत्र को **'की-लो-ना-सू-फा-ला-ना'** कहा है।
- छोटा नागपुर और राजमहल का वर्णन कई विदेशी यात्रियों द्वारा किया गया है, जैसे चीन के ह्वेनसांग, ईरान के अब्दुल लतीफ, ईरान के बहबहानी और बिशप हेबर।

प्राचीन इतिहास की अवधि

झारखंड के प्राचीन इतिहास को प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक काल में विभाजित किया गया है।

प्रागैतिहासिक काल

झारखंड के प्रागैतिहासिक काल को आगे इस प्रकार विभाजित किया गया है:

पूर्व पाषाण काल

- पूर्व पाषाण काल के पत्थर के औजार, जैसे **हस्त कुल्हाड़ी** और **स्क्रेपर, बोकारो, देवघर, दुमका, हजारीबाग के बांदा और रामगढ़ के दामोदर नदी क्षेत्र जैसे क्षेत्रों में पाए गए हैं।**
- **बरगुंडा और करहरबारी** में तांबे के बर्तन और औजार प्राप्त हुए हैं।
- **हजारीबाग के इस्को** में लगभग 9000 से 50,000 ईसा पूर्व की प्रागैतिहासिक गुफा चित्र प्राप्त हुए हैं।
- विभिन्न स्थानों पर मिट्टी के बर्तन, टैटू और विवाह एवं फसल कटाई के दृश्यों को दर्शाने वाली पेंटिंग प्राप्त हुई हैं। पूर्व पाषाण काल की अन्य सामग्रियां **अमीनगर, चाईबासा, दहीगढ़ा, ढोरंगी, नरसिंहगढ़, जगन्नाथपुर और लोटापहाड़ जैसे क्षेत्रों में प्राप्त हुई हैं।**
- **पलामू, गढ़वा और सिंहभूम** में भी पत्थर के औजार और पेंटिंग प्राप्त हुई हैं।
- पुरापाषाण काल के प्रारंभिक अवशेष **जुरदाग, परसादिन, जोजदा, चिपड़ी और सरदकेल जैसी जगहों पर मिले हैं।**

मध्य पाषाण काल

- मध्य पाषाण काल के **कई पुरातात्विक साक्ष्य धनबाद, दुमका और पलामू जैसे क्षेत्रों** में प्राप्त हुए हैं।
- हजारीबाग जिले के **बड़कागांव, मंडी, रजरप्पा और अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ रामगढ़ में भी पत्थर** के उपकरण प्राप्त हुए हैं। **दलमी** में कई मंदिरों के खंडहर और बौद्ध मूर्तियों के अवशेष भी मिले हैं।
- **रांची जिला** मध्य पाषाण काल की सामग्रियों का समृद्ध स्रोत रहा है, जबकि **जगन्नाथपुर और पूर्वी सिंहभूम** में भी महत्वपूर्ण खोजें हुई हैं।
- इस अवधि के दौरान **माइक्रोलिथ** औजारों का व्यापक रूप से उपयोग किया गया था। ऐसे औजार झारखंड के **धनबाद, दुमका, पलामू, रांची और पूर्वी सिंहभूम क्षेत्रों में खोजे गए हैं।**

नव पाषाण काल

- नव पाषाण काल के साक्ष्य **रांची, लोहरदगा, जमशेदपुर और पूर्वी सिंहभूम के अन्य हिस्सों** में मिले हैं।
- नव पाषाण काल, पूर्ववर्ती की तुलना में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि इस समय लोग शिकारी और खाद्य संग्राहक से कृषक बने तथा पशुपालन करने लगे।
- इस काल के पुरातात्विक खोजों में मिट्टी के बर्तन, जानवरों की हड्डियों से बने औजार और पत्थर के हथौड़े शामिल हैं।
- **1868 में चाईबासा में कारो नदी** क्षेत्र से कई हथियार प्राप्त किए गए थे।

कांस्य युग

- कांस्य युग के पुरातात्विक साक्ष्य सिंहभूम क्षेत्र में प्राप्त हुए हैं। माना जाता है कि इस युग की शुरुआत छोटा नागपुर क्षेत्र में **असुर और बिरजिया** जनजातियों द्वारा की गई थी।
- **हजारीबाग, रांची, बोकारो, दुमका, मांडू, बरमुंडा, रजरप्पा, कुसुमगढ़ और पांडु** जैसे क्षेत्रों में विभिन्न कांस्य औजार और बर्तन प्राप्त हुए हैं।
- **लोहरदगा** में एक कांस्य का कप प्राप्त हुआ, जबकि पांडु में ईंट की दीवार, मिट्टी का बर्तन और तांबे के उपकरण प्राप्त हुए।
- **मुराद** में **तांबे की चेन और कांस्य की अंगूठी** प्राप्त हुई, जबकि लुपुंगडीह में प्रारंभिक कब्रिस्तान के प्रमाण मिले हैं।

ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल प्रागैतिहासिक युग के बाद के समय को संदर्भित करता है, जिसमें वैदिक काल भी शामिल है।

वैदिक काल

इस अवधि के दौरान, झारखंड को **किक्कट प्रदेश** के रूप में जाना जाता था। यहाँ मुख्य रूप से **असुर, खड़िया और बिरहोर** जनजातियाँ निवास करती थीं।

वैदिक काल को दो भागों में विभाजित किया गया है:

1. **ऋग्वैदिक काल:** ऋग्वेद में झारखंड को **'किकटानाम दशोअनार्य'** कहा गया है। इस काल में लोग मुख्य रूप से पशुपालक थे। ऋग्वेद में झारखंड की जनजातियों का उल्लेख **'शिश्नोदेव'** के रूप में किया गया है।
2. **उत्तर वैदिक काल:** इस काल के दौरान, **किकट प्रदेश कई राज्यों में विभाजित हो गया था**, जिनमें **मगध, अंग, पुंड्र और कलिंग** शामिल थे।

बौद्ध धर्म

- **बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व में लुंबिनी (नेपाल) में हुआ था।**
- कुछ विद्वानों का मानना है कि गौतम बुद्ध का जन्म **छोटा नागपुर** में हुआ था। प्रमुख विद्वान अमरनाथ दास ने छोटा नागपुर के कई स्थानों का उल्लेख किया है जो बुद्ध के जीवन और समय से जुड़े हैं।
- **धनबाद जिले के दलमी, दियापुर और बुधपुर** सहित झारखंड के विभिन्न हिस्सों में बौद्ध स्मारकों और मूर्तियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- जमशेदपुर के पास **भुला गाँव**, गुमला जिले के **कटुंगा गाँव**, रांची जिले के **जोन्हा** और धनबाद के **इचागढ़** क्षेत्रों में कई बौद्ध मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।
- **हजारीबाग** में बरही के पास **सूर्यकुंड** में बुद्ध की एक पत्थर की मूर्ति प्राप्त हुई थी।
- **पलामू के मूर्तिया गाँव** में कई बौद्ध अवशेष मिले हैं, जिन्हें रांची विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के संग्रहालय में संरक्षित रखा गया है।
- **रांची जिले** में खूंटी से 3 किमी पूर्व में स्थित **बेलवाडाग गाँव** में एक टीला है जो बुद्ध विहार के अवशेषों का हिस्सा प्रतीत होता है। चंद्रगुप्त मौर्य इस क्षेत्र से परिचित थे, क्योंकि उनके एक शिलालेख में इस क्षेत्र की **'अटवी'** जनजातियों का उल्लेख मिलता है।
- **हजारीबाग के सीतागढ़ा पहाड़ों में एक बौद्ध मठ की खोज की गई थी**, जिसका उल्लेख चीनी यात्री **फाहियान (Fa-Hien)** ने किया था। यहाँ पाए गए अधिकांश कलाकृतियाँ धूसर बलुआ पत्थर से बनी हैं।

जैन धर्म

- झारखंड क्षेत्र में जैन धर्म का भी प्रसार हुआ।
- माना जाता है कि चौबीस जैन तीर्थंकरों में से **बीस तीर्थंकरों** ने कई अन्य भिक्षुओं के साथ **पारसनाथ पहाड़ी** (जिसे **सम्मेद शिखरजी** के नाम से भी जाना जाता है) पर निर्वाण प्राप्त किया था।
  - ✓ शिखरजी की तीर्थयात्रा गिरिडीह जिले के मधुबन जंगल के माध्यम से 27 किमी की परिक्रमा है।
- **डॉ. विरोत्तम के अनुसार**, "छोटा नागपुर क्षेत्र जैन धर्म का प्राथमिक केंद्र था। दामोदर और कसाई नदियों की नदी घाटियों में जैन धर्म के कई अवशेष खोजे गए हैं"।
- **कर्नल डाल्टन ने** पाकवीरा तथा कसाई नदी के किनारे कई जैन मूर्तियाँ प्राप्त की थीं।
- कुछ विद्वानों का मानना था कि पलामू और गढ़वा के क्षेत्रों में जैन धर्म का प्रभाव कम था, लेकिन डॉ. विरोत्तम ने **सतबरवा** के पास कई जैन पूजा स्थलों की ओर इशारा करते हुए इस दावे का खंडन किया।
- **ह्वेनसांग के लेखों से पता चलता है कि शशांक के शासन के कारण बौद्ध और जैन धर्म का** पतन हुआ और हिंदू धर्म का प्रमुख धर्म के रूप में पुनरुद्धार हुआ।

महत्वपूर्ण राजवंश/साम्राज्य

मगध साम्राज्य

- **बुद्ध काल (6वीं से 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व) के दौरान, 16 महाजनपद स्थापित किए गए थे,** जिनमें मगध सबसे शक्तिशाली था।
- **इस महाजनपद को किक्कट के नाम से भी जाना जाता था।** मगध का पहला संदर्भ **महाभारत** में मिलता है, जहाँ असुरों के राजा **जरासंध** मगध के शासक थे।
- **मगध साम्राज्य** उत्तर में **गंगा नदी से लेकर दक्षिण में विंध्य तक और पश्चिम में सोन नदी तक फैला हुआ था।**

मौर्य साम्राज्य

- **चन्द्रगुप्त मौर्य** मौर्य साम्राज्य के सबसे शक्तिशाली शासक थे और **चाणक्य** उनके गुरु थे।
  - ✓ **चाणक्य ने अपनी कृति 'अर्थशास्त्र' में झारखंड को 'कुक्कुट' कहा है।**
- **चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के दौरान** इस क्षेत्र को **आट्वी** या **आटव** के नाम से जाना जाता था।
- चन्द्रगुप्त के पोते अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाया और मौर्य काल के दौरान रॉक-कट वास्तुकला (चट्टानों को काटकर बनाई गई वास्तुकला) विकसित की।
  - ✓ **धनबाद जिले के चैती गोविंदपुर में स्थित एक अशोक स्तंभ**, मौर्य साम्राज्य के विस्तार की जानकारी प्रदान करता है।
  - ✓ 13वें प्रमुख शिलालेख में, मौर्य सम्राट अशोक ने इस क्षेत्र को आटविक (Aatvik) जनजाति की भूमि बताया है।
- **मेगास्थनीज** ने अपनी पुस्तक **'इंडिका'** में मौर्य शासन के कई पहलुओं की प्रशंसा की है।
- **अर्थशास्त्र के अनुसार**, मगध, मौर्य साम्राज्य और दक्षिण भारत के व्यापारिक मार्ग झारखंड क्षेत्र से होकर गुजरते थे।

कुषाण राजवंश

- **कुषाण शासक कनिष्क** ने **झारखंड** पर शासन करने के लिए अपने प्रतिनिधियों, **महाक्षत्रप खरपल्लान** और **क्षत्रप वनस्पर** को नियुक्त किया था।
- झारखंड में **कुषाण काल के कई सिक्के** मिले हैं, जिनमें **तीन सोने के सिक्के शामिल हैं। इनमें से एक पर हुविष्क का नाम अंकित था, जो रांची जिले के बेलवादाग गाँव में खोजा गया था।**
- **हजारीबाग जिले** के **कोसीतानर में कुषाण काल के 130 तांबे के सिक्के** मिले थे।

गुप्त राजवंश

- गुप्त राजवंश की स्थापना **चन्द्रगुप्त प्रथम** ने की थी, लेकिन **झारखंड में गुप्त साम्राज्य के शासन की शुरुआत समुद्रगुप्त के साथ हुई।**
- समुद्रगुप्त ने अपने साम्राज्य का विस्तार झारखंड के कुछ हिस्सों तक किया। उनके दरबारी कवि **हरिषेण** ने **इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख (प्रयाग प्रशस्ति)** में **उनकी वीरता की प्रशंसा की है, जहाँ उन्होंने झारखंड को 'मुरुंड' कहा है।**
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार, बंगाल के **गौड़ वंश के शासक शशांक ने अपने साम्राज्य का विस्तार झारखंड तक किया था।**

नाग वंश

- नागवंशी राजवंश झारखंड के सबसे महत्वपूर्ण राजवंशों में से एक है, जिसने लगभग **2000 वर्षों** तक छोटा नागपुर क्षेत्र पर शासन किया।
- नागवंशी शासकों का प्रारंभिक इतिहास पूरी तरह से प्रमाणित नहीं है। नागवंश की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न मत प्रचलित हैं।
  - ✓ जे. रीड ने अपनी रिपोर्ट 'सर्वे एंड सेटलमेंट ऑपरेशंस इन द डिस्ट्रिक्ट ऑफ रांची' में उल्लेख किया है कि वर्तमान नागवंशी शासकों के पूर्वज इस क्षेत्र में बसे हुए थे। छोटा नागपुर के महाराजाओं ने संभवतः 10वीं शताब्दी ईस्वी में स्वयं को मुंडा जनजातियों के नेताओं के रूप में स्थापित किया।

- नागवंशी शासकों की राजधानियाँ थीं: **सुतियाम्बे, चुटिया, खुखरा, दोयसा, पालकोट और रातूगढ़**।
- **फणी मुकुट राय इस क्षेत्र पर शासन करने वाले पहले नागवंशी शासक थे।** उनके शासनकाल के दौरान जनजातियों का प्रभुत्व था, लेकिन अन्य हिंदू जातियों जैसे ब्राह्मणों, राजपूतों और अन्य की संख्या भी बढ़ने लगी थी।
- नागवंशी शासकों ने **पंचेत** के शासक की मदद ली और **क्योंझर** के शासक को पराजित किया।
- **चौथे नागवंशी शासक राजा प्रताप राय ने अपनी राजधानी सुतियाम्बे से चुटिया स्थानांतरित कर दी थी।** उन्होंने लोगों को नई राजधानी में बसने के लिए आमंत्रित किया, जो शांतिपूर्ण और सुव्यवस्थित थी।
- **इस राजवंश के कुछ उल्लेखनीय शासकों** में राजा मधु सिंह, राजा दुर्जन साल, राजा रघुनाथ शाह, महाराजा उदय प्रताप नाथ शाहदेव और अंतिम राजा महाराजा लाल चिंतामणि शरण नाथ शाह शामिल हैं।

पाल राजवंश

- **पाल साम्राज्य 8वीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी तक सत्ता में था।**
- इस साम्राज्य का केंद्र वर्तमान बंगाल-बिहार क्षेत्र में था। **महेंद्रपाल का एक शिलालेख चतरा जिले के इटखोरी में मिला है।**
- **पाल शासक बौद्ध धर्म के महायान और तांत्रिक स्कूलों (संप्रदायों) के अनुयायी थे।**
- पाल शासकों ने कई मंदिरों, कलाकृतियों का निर्माण किया और नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालयों को समर्थन दिया। **झारखंड के मलूटी गाँव में पाल साम्राज्य के 72 प्राचीन मंदिर खोजे गए हैं।**
  - ✓ **धर्मपाल द्वारा निर्मित सोमपुरा महाविहार**, भारत का सबसे बड़ा बौद्ध विहार है।

झारखंड में स्थानीय राजवंशों का उदय

मुंडा साम्राज्य

- **रीता या रीसा मुंडा जनजाति के पहले जनजातीय नेता थे। उन्होंने सुतिया पाहन को मुंडा लोगों का शासक नियुक्त किया,** जिन्होंने इस क्षेत्र का नाम बदलकर **"सुतिया नागखंड"** कर दिया।
- **सुतिया ने अपने राज्य को 7 गढ़ों (क्षेत्रों) में विभाजित** किया था। ये गढ़ आगे **21 परगनों (प्रशासनिक इकाइयों)** में विभाजित थे।
  - ✓ 7 गढ़: लोहागढ़ (लोहरदगा), हजारीगढ़ (हजारीबाग), पालूनगढ़ (पलामू), मानगढ़ (मानभूम), केसलगढ़, सुरगुजागढ़ (सुरगुजा) और सिंहगढ़।
  - ✓ 21 परगना: ओमदंडा, दोयसा, खुखरा, सुरगुजा, जसपुर, गंगपुर, पोरहाट, गिरगा, बिरुआ, बोनई, कोरिया, लछरा, बिरना, सोनपुर, बेलखदर, बेलसिंग, तमाड़, लोहरडीह, खरसिंग, उदयपुर और चंगमंगकर।
- सुतिया पाहन द्वारा गठित राज्य पूरे झारखंड क्षेत्र में फैला हुआ था।

मान वंश

- मान वंश की स्थापना **हजारीबाग और मानभूम** क्षेत्रों में हुई थी। **इस राजवंश के साक्ष्य हजारीबाग के दूधपानी में मिले शिलालेखों** से प्राप्त होते हैं।
- समय के साथ, यह राजवंश कई छोटे क्षेत्रों में विभाजित हो गया।

रक्सैल वंश

- रक्सैल वंश ने **पलामू** पर शासन किया। रक्सैल राजस्थान से पलामू आए थे और स्वयं को **राजपूत** बताते थे।
- उन्होंने **सुरगुजा** को अपने राज्य में मिलाकर साम्राज्य का विस्तार किया। **पलामू की अन्य जनजातियों में खरवार, गोंड, कोरवा, पहाड़िया और किसान शामिल थे।**
- खरवार एक प्रभावशाली जनजाति के रूप में उभरे, जिसमें प्रताप धवल इस जनजाति के एक उल्लेखनीय शासक थे।
- **रक्सैल वंश ने 16वीं शताब्दी तक पलामू के एक हिस्से पर शासन किया।**

सिंहभूम का सिंह वंश

- **सिंहभूम का नाम पोरहाट के सिंह शासकों के नाम पर रखा गया है।**
- सिंह वंश के संस्थापक पश्चिमी भारत से आए थे और लगभग 8वीं शताब्दी ईस्वी के आसपास सिंहभूम में बस गए थे।
- **इस राजवंश की दो शाखाएं हैं: पहली शाखा: इसकी स्थापना काशी नाथ सिंह ने की थी। दूसरी शाखा: इसकी स्थापना दर्प नारायण सिंह ने की थी**, जो 1205 ईस्वी में सिंहासन पर बैठे थे।
  - ✓ दूसरी शाखा के कुछ प्रमुख शासकों में काशी राम सिंह और जगन्नाथ सिंह शामिल हैं।
- दर्प नारायण सिंह की मृत्यु के बाद, उनका पुत्र युधिष्ठिर शासक बना, जिसने 1262 ईस्वी से 1271 ईस्वी तक शासन किया। **इस वंश के चौथे शासक अच्युत सिंह** थे।

नोट: सिंह वंश के वंशजों का दावा है कि उन्होंने सिंहभूम में हो (Ho) जनजाति के आगमन से पहले ही अपने राज्य की स्थापना किया थी। इसके विपरीत, हो समुदाय का मानना है कि इस क्षेत्र का नाम उनके देवता 'सिंगबोंगा' के नाम पर पड़ा है।

ढाल वंश

- **सिंहभूम क्षेत्र के ढालभूम क्षेत्र पर धाल राजाओं का शासन था।** वे संभवतः धोबी जाति के थे। उनके यहाँ नरबलि की प्रथा प्रचलित थी।
- **चिंतामणि धाल वंश के प्रथम राजा थे।**
- ढालभूम के शासकों की कुलदेवी रंकिणी देवी थीं।

रामगढ़ राज्य

- **रामगढ़ राज्य की स्थापना बाघदेव सिंह ने 1368 ईस्वी में की थी।**
- अपने भाई के साथ, वे शुरू में नागवंशी शासकों की सेवा में थे। बाद में, उन्होंने नागवंशी सेवा छोड़ दी और कर्णपुर चले गए, जहाँ स्थानीय शासक को हराकर अपना नियंत्रण स्थापित किया।
- **उन्होंने सबसे पहले सीसिया को अपनी राजधानी बनाया।** समय के साथ राजधानी सीसिया से उरदा, फिर बादाम और अंत में रामगढ़ स्थानांतरित हुई।
- **राजा हेमंत सिंह (1604-1661)** ने अपनी राजधानी उरदा से बादम स्थानांतरित की थी। बाद में, राजा दलेल सिंह ने 1670 में राजधानी बादम से रामगढ़ स्थानांतरित कर दी।
- 1772 में, सिंह वंश के तेज सिंह रामगढ़ के सिंहासन पर बैठे और इचाक से शासन किया।
- 1880 के दशक की शुरुआत में, रामगढ़ राज्य एक तीसरे राजवंश के नियंत्रण में आ गया, जिसके पहले शासक राजा ब्रह्मदेव नारायण सिंह बने। इसके बाद राजधानी पद्मा स्थानांतरित कर दी गई। 1937 में, कामाख्या नारायण रामगढ़ के सिंहासन पर बैठे।

खड़गडीहा राज्य

- रामगढ़ के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित इस राज्य की स्थापना 15वीं शताब्दी में **हंसराज** ने की थी। उन्होंने बंदवत जाति के एक शासक को हराकर हजारीबाग के 90 किलोमीटर लंबे क्षेत्र पर अपना शासन स्थापित किया था।

पंचेत राज्य

- पंचेत पश्चिमी झारखंड क्षेत्र का सबसे शक्तिशाली राज्य था, जो पूर्वी नागवंशी राज्य के भीतर स्थित था।
- लोकप्रिय किंवदंती के अनुसार, **इसकी स्थापना काशीपुर के राजा के पुत्र नरेश अनीत लाल ने की थी।**
- उन्होंने पंचेतगढ़ के किले का निर्माण करवाया और 'कपिला गाय की पूँछ' को राज्य के प्रतीक के रूप में अपनाया।

चेरो वंश

- **चेरो वंश की स्थापना 16वीं शताब्दी ईस्वी में भगवत राय** ने रक्सैलों को हराकर की थी।
- इस राजवंश के शासकों ने पलामू क्षेत्र पर शासन किया, जिसमें **राजा प्रताप धवल** सबसे प्रसिद्ध शासक थे।

छोटा नागपुर की जनजातियों का प्राचीन इतिहास

- **प्रारंभिक जनजातियाँ: छोटा नागपुर की सबसे पुरानी जनजातियों में खड़िया, बिरहोर और असुर शामिल थे।** बाद में मुंडा, उरांव और हो जनजातियाँ आईं। इसके पश्चात चेरो, खरवार, भूमिज और संथाल झारखंड क्षेत्र में स्थानांतरित हुए।
  - ✓ **जनजातियों का कालानुक्रमिक क्रम खरिया, बिरहोर, असुर, कोरवा, मुंडा, ओरांव, हो, चेरो, खरवार, भूमिज और संथाल है।**
- **प्रवेश मार्ग: खड़िया और बिरहोर कैमूर की पहाड़ियों के रास्ते छोटा नागपुर में दाखिल** हुए। असुर और बिरजिया के साथ खड़िया छोटा नागपुर में बसने वाली सबसे पहली जनजातियों में से थीं।
- **उरांव जनजाति: यह जनजाति संभवतः दक्षिण भारत की मूल निवासी थी,** जो विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए अंततः छोटा नागपुर में बसी। भाषाविदों ने उरांवों की **कुड़ुख** भाषा और कन्नड़ एवं तमिल भाषाओं के बीच समानताएं नोट की हैं।
- उरांवों की एक शाखा **राजमहल** के पास बसी, दूसरी **पलामू** में और शेष छोटा नागपुर की ओर चली गई।
- **मुंडा जनजाति: इतिहासकारों का सुझाव है कि मुंडा तिब्बत से झारखंड आए थे।**
- **नाग वंश की नींव: मुंडा जनजाति ने ही इस क्षेत्र में नाग वंश की नींव रखी थी। 1000 ईसा पूर्व** तक चेरो, खरवार और संथाल को छोड़कर लगभग सभी जनजातियाँ इस क्षेत्र में बस चुकी थीं।
- **साहित्यिक स्रोत: डी.एम. मजूमदार की पुस्तक 'रेसेस एंड कल्चर्स ऑफ इंडिया'** झारखंड में चेरो, खरवार, भूमिज और संथाल जैसी जनजातियों के आगमन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3
CHAPTER
मध्यकालीन इतिहास

झारखंड के मध्यकालीन इतिहास में दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य का शासन शामिल है। भारत में दिल्ली सल्तनत और मुगल शासन की स्थापना से पहले, झारखंड पर कई छोटे हिंदू राज्यों का शासन था। उनमें से सबसे प्रमुख पलामू, खोखरा और सिंहभूम में स्थित थे।

दिल्ली सल्तनत और झारखंड

दिल्ली सल्तनत ने लगभग 320 वर्षों तक भारत के बड़े हिस्सों पर शासन किया। इस पर पाँच राजवंशों ने शासन किया:

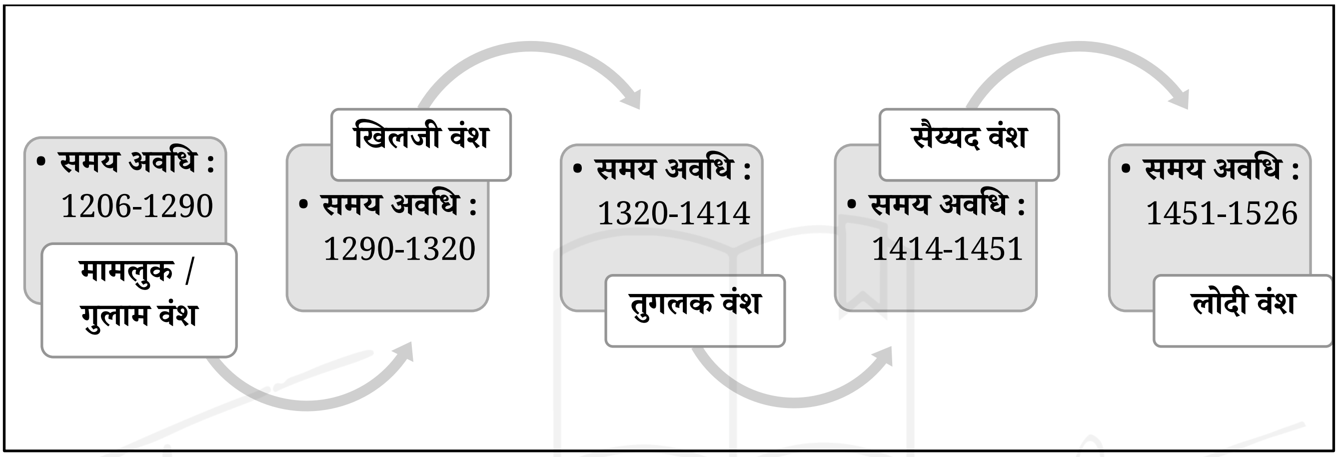

मामलुक वंश और झारखंड

- मुहम्मद गोरी के एक तुर्क सेनापति **कुतुब-उद-दीन ऐबक** ने **1206 ईस्वी** में मामलुक वंश की स्थापना की और उत्तरी भारत पर शासन किया। इस अवधि के दौरान, झारखंड पर तीन राजाओं का शासन था: **हरिकरण राय (1206–1234), शिवकरण राय (1235–1276), और बेणुकर्ण राय (1277–1299)।**
- 1206 में, **बख्तियार खिलजी** ने झारखंड से गुजरते हुए नादिया (बंगाल) पर हमला किया। यह कुतुब-उद-दीन ऐबक के शासनकाल के दौरान हुआ था।
- **इल्तुतमिश और बलबन के शासनकाल का झारखंड पर बहुत कम प्रभाव पड़ा, क्योंकि उस समय नागवंशी शासक शक्तिशाली थे।**

खिलजी वंश

- **खिलजी वंश की स्थापना जलाल-उद-दीन खिलजी** ने की थी।
- इसके सबसे प्रमुख शासक, **अलाउद्दीन खिलजी** ने मंगोल आक्रमणों के खिलाफ अपने साम्राज्य की रक्षा की। **1310** में, उनके **प्रधान सेनापति, मलिक काफूर ने छोटा नागपुर क्षेत्र पर आक्रमण किया।**

तुगलक वंश

- **तुगलक वंश की स्थापना 1320** में **गयासुद्दीन तुगलक (गाजी मलिक)** ने की थी।
- **1340** में, **मुहम्मद बिन तुगलक** ने शाही खजाने को लूटने वाले लुटेरों को दबाने के लिए हजारीबाग के **चाय चंपा** क्षेत्र में अपने सेनापति **मुहम्मद इब्राहिम बाया** को भेजा था।

- बंगाल के शासक इलियास शाह के साथ मिलकर, फिरोज शाह तुगलक ने हजारीबाग के सतगाँव क्षेत्र पर कब्जा कर लिया।
- **1372** में, उन्होंने ओडिशा पर हमले की योजना बनाते समय इस क्षेत्र का उपयोग किया। उनके उत्तराधिकारियों ने 1414 तक शासन किया।
- इस अवधि के दौरान, **छोटा नागपुर नागवंशी राजा शिवदास करण राय** के अधीन था, जिन्होंने **1401 ईस्वी** में **घाघरा (गुमला)** में **हापामुनी महामाया मंदिर** की स्थापना की थी।

सैय्यद वंश

- यह राजवंश लगभग 37 वर्षों तक चला। इस अवधि के दौरान, **झारखंड पर नागवंशी राजा उदयकर्ण (1428–1457) का शासन था।**

लोदी वंश

- सैय्यद वंश को हटाकर **बहलोल लोदी** ने लोदी वंश की स्थापना की।
- **सिकंदर लोदी (1489–1517) के शासनकाल के दौरान, संध्या के राजा ने आक्रमण किया और** झारखंड में नागवंशी शासकों के कुछ क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया।

झारखंड में मुगल साम्राज्य

मुगल अभिलेखों में इस क्षेत्र को **खुखरा** या **कुकरा** के नाम से जाना जाता था। **आईन-ए-अकबरी** में इसे **कोकरा** और **खंखराह** कहा गया है। मुगल काल के दौरान, वर्तमान झारखंड के क्षेत्र पर इनका शासन था:

1. **पलामू के रक्सैल**
2. **छोटा नागपुर के नागवंशी**
3. **सिंहभूम का सिंह वंश**

बाबर और हुमायूं काल के दौरान झारखंड

- बाबर और हुमायूं के शासनकाल के दौरान, झारखंड मुगल नियंत्रण से बाहर रहा।
- इसी अवधि के दौरान, चेरो वंश ने रक्सैलों को हराया और पलामू में अपना शासन स्थापित किया।

शेरशाह सूरी काल के दौरान झारखंड

- शेरशाह सूरी ने 1538 में रोहतासगढ़ पर कब्जा कर लिया। इस समय तक, चेरो समुदाय ने इस क्षेत्र में खुद को मजबूती से स्थापित कर लिया था।
- शेरशाह सूरी को चेरो शासकों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। उन्होंने महारथ चेरो के खिलाफ 4,000 घुड़सवारों के साथ दो सेनापतियों, ख्वास खान और दरिया खान को भेजा।
  - ✓ ख्वास खान ने 1538 में चेरो को हरा दिया। इस अभियान का उल्लेख **अहमद यादगार** ने **'तारीख-ए-शेरशाही'** में किया है।
- **इस अवधि के दौरान, छोटा नागपुर पर राजा वैरिसल** (1536–1549) **का शासन था,** जिसके बाद उनका पुत्र **दुर्जनसाल सिंह,** जो अकबर के शासनकाल में सिंहासन पर बैठा।

अकबर के काल के दौरान झारखंड

अकबर के शासनकाल में झारखंड में कई राजवंश शासन कर रहे थे:

1. **कोकरा में नागवंशी**
2. **पलामू में चेरो वंश**
3. **सिंहभूम में सिंह वंश**
4. **हजारीबाग में रामगढ़ शासक**
5. **धनबाद में पंचेत शासक**

- मुगल विस्तार के समय, नागवंशी शासक मधु सिंह ने मुगल सत्ता स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। **फलस्वरूप, अकबर ने 1585 में अपने सेनापति शाहबाज खान कम्बोह को भेजा, जिसने नागवंशियों को पराजित किया।**
- अकबर ने धीरे-धीरे नागवंशी, चेरो और सिंह राजवंशों को मुगल नियंत्रण के अधीन कर लिया।
- **इसी अवधि के दौरान मुगलों ने सिंहभूम में प्रवेश किया, जबकि सिंह वंश पोराहट से शासन कर रहा था।**
- पलामू को जीतने के लिए, **अकबर ने चेरो शासक रणपत चेरो के विरुद्ध राजा मान सिंह को भेजा।**
  - ✓ मान सिंह ने छोटा नागपुर के कई स्थानीय शासकों को हराया और **1589** तक पलामू पर कब्जा कर लिया।
  - ✓ **1592** में, उन्होंने पोराहट पर भी कब्जा कर लिया और **रंजीत सिंह** को हराया।
- **1605** में अकबर की मृत्यु के बाद, चेरो वंश ने पुन: स्वतंत्रता प्राप्त कर ली।
- झारखंड में अकबर की रुचि का एक मुख्य कारण कोयल नदी क्षेत्र में हीरों की उपस्थिति थी।

जहाँगीर के काल के दौरान झारखंड

- जहाँगीर को **1605** में सिंहासन विरासत में मिला। झारखंड में उसके शासन को मुख्य रूप से दो संदर्भों में समझा जाता है:
  - ✓ चेरो समुदाय के साथ मुगल संबंध
  - ✓ नागवंशी शासकों के साथ मुगल संबंध
- **अनंत राय**, जो भगवत राय के उत्तराधिकारी थे, उन्होंने जहाँगीर के शासनकाल के शुरुआती वर्षों में **31 वर्षों** तक शासन किया (जैसा कि मिर्जा नाथन द्वारा उल्लेख किया गया है)।
- जहाँगीर के शासन के दूसरे वर्ष में, **अफ़ज़ल खान** (अबुल फज़ल का पुत्र) को बिहार का राज्यपाल नियुक्त किया गया था।
- **1612** में, **ज़फर खान** को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया गया और उसे हीरे की संपत्ति के कारण **कोकरा** पर आक्रमण करने का आदेश दिया गया।
- अनंत राय के खिलाफ एक अभियान की योजना बनाई गई थी, लेकिन 1612 में अफ़ज़ल खान की मृत्यु के कारण इसे छोड़ दिया गया। अनंत राय के बाद, **शबल राय** पलामू के शासक बने।
- जहाँगीर ने बाद में शबल राय के खिलाफ अभियान का आदेश दिया। उन्हें बंदी बना लिया गया, दिल्ली ले जाया गया और कथित तौर पर एक बाघ के साथ लड़ाई में उनकी मृत्यु हो गई, जो तनावपूर्ण मुगल-चेरो संबंधों को दर्शाता है।
- **1615** में, **इब्राहिम खान** को सूबेदार नियुक्त किया गया और उसने नागवंशी वंश के **दुर्जनसाल** के खिलाफ एक अभियान का नेतृत्व किया। दुर्जनसाल हार गया और उसे बंदी बना लिया गया।
- छोटा नागपुर (कोकरा) मुगल नियंत्रण में आ गया। दुर्जनसाल को **ग्वालियर के किले** में भेज दिया गया, जहाँ वह **12 वर्षों** तक कैद रहा।
- बाद में उन्हें हीरों की पहचान करने में उनकी विशेषज्ञता के कारण रिहा कर दिया गया।
- 1627 में, दुर्जनसाल झारखंड वापस लौटे और कोकरा का सिंहासन पुनः प्राप्त किया।

शाहजहाँ के काल के दौरान झारखंड

- शाहजहाँ 1628 में सिंहासन पर बैठा। उस समय झारखंड का एक बड़ा हिस्सा मुगलों के नियंत्रण में था।
- मुगलों की मुख्य रुचि नागवंशी राज्य और पलामू में थी।
- दुर्जन साल अपने राज्य की रक्षा करना चाहता था। इसलिए, उसने अपनी राजधानी को कोकरा से दोयसा स्थानांतरित कर दिया। दोयसा क्षेत्र तीन ओर से ऊंची पहाड़ियों और चौथी ओर कोयल नदी से घिरा हुआ था।
  - ✓ **दोयसा में, दुर्जन साल ने एक भव्य महल का निर्माण कराया जिसे नवरतनगढ़ या दोयसागढ़ के नाम से जाना जाता है।** यह पानी से भरी एक खाई से घिरा हुआ था, जिससे दुश्मनों के लिए इसे पार करना कठिन था।

- दुर्जन साल के बाद, रघुनाथ शाह ने 1640 से 1690 तक शासन किया। फ्रांसीसी यात्री टैवर्नियर के अनुसार, शाहजहाँ ने रघुनाथ शाह को मुगल साम्राज्य को नजराना (टैक्स) देने के लिए मजबूर किया था।
- सहबल राय के बाद, प्रताप राय पलामू के चेरो शासक बने। 1632 में, पलामू को ₹1,36,000 के वार्षिक भुगतान के बदले पटना के राज्यपाल को जागीर के रूप में दे दिया गया था।
- जब प्रताप राय ने भुगतान रोक दिया, तो मुगल सेना ने पलामू पर आक्रमण किया, प्रताप राय को हराया और उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर किया। बाद में उन्होंने एक समझौते पर सहमति जताई और 1647 तक मुगलों के प्रति वफादार रहे।

औरंगजेब के काल के दौरान झारखंड

- औरंगजेब छठा मुगल सम्राट था और उसने अधिकांश भारतीय उपमहाद्वीप पर शासन किया।
- जब वह सिंहासन पर बैठा, तब रघुनाथ शाह झारखंड के शासक थे और उनकी राजधानी दोयसा थी, जिसे पहले दुर्जन साल ने स्थापित किया था।
  - ✓ **रघुनाथ शाह ने रांची में जगन्नाथ मंदिर, बोड़ेया में मदन मोहन मंदिर (राधा-कृष्ण मंदिर) और रांची में ही राम-सीता मंदिर का निर्माण कराया था।**
- फ्रांसीसी यात्री **टैवर्नियर** के अनुसार, औरंगजेब के शासनकाल के दौरान झारखंड पर केवल एक मुगल आक्रमण दर्ज है। दूसरा बड़ा आक्रमण पलामू के चेरो शासक **मेदिनी राय** की ओर से हुआ था, जिन्होंने नवरतनगढ़ को नष्ट कर दिया और प्रसिद्ध **नागपुरी दरवाजा** अपने साथ ले गए, जिसे उन्होंने पलामू के नए किले में स्थापित किया।
- मेदिनी राय ने **1658 से 1674** तक शासन किया। एक शक्तिशाली शासक होने के बावजूद, उन्होंने मुगल आधिपत्य स्वीकार किया था, लेकिन औरंगजेब के उत्तराधिकार युद्ध के दौरान उन्होंने नजराना देना बंद कर दिया था।
- सिंहासन पर बैठने के बाद, औरंगजेब ने बिहार के राज्यपाल **दाउद खान** को पलामू पर हमला करने का आदेश दिया। **5 मई 1660** को दाउद खान ने पलामू और बाद में **कुंडा किले** पर कब्जा कर लिया।
  - ✓ कुंडा के शासक **चुन राय** की इस्लाम धर्म अपनाने के बाद उनके भाई सुरवर राय ने हत्या कर दी थी।
- औरंगजेब ने मेदिनी राय को इस्लाम स्वीकार करने, **पेशकश** (नजराना) देने और पलामू पर नियंत्रण बनाए रखने का आदेश दिया। मेदिनी राय ने इनकार कर दिया, जिसके कारण मुगलों ने हमला किया। वह जंगल में भाग गए और **सरगुजा राज्य** में शरण ली।
- **आलमगीरनामा** के अनुसार, औरंगजेब ने **1666** में **मनकली खान** को पलामू का फौजदार नियुक्त किया। बाद में, उनका स्थानांतरण कर दिया गया और पलामू को बिहार के राज्यपाल के अधीन कर दिया गया। इसका लाभ उठाकर मेदिनी राय ने अपना राज्य वापस पा लिया और **1674** तक शासन किया।
- 1674 में उनकी मृत्यु के बाद, **रुद्र राय** ने 1680 तक शासन किया, जिसके बाद **दिरक पाल** आए, जिन्होंने 1697 तक शासन किया। उनके बाद **शबल राय** उत्तराधिकारी बने और **1716 ईस्वी** तक शासन किया।
- औरंगजेब के शासनकाल के दौरान, मुगल नियंत्रण **पलामू, गुमला, रांची, लातेहार, सिमडेगा** और **लोहरदगा** जैसे क्षेत्रों तक ही सीमित रहा, जबकि **धनबाद** और **पुरुलिया** मुगल सत्ता से बाहर रहे। औरंगजेब की नीतियों के कारण, इस समय के दौरान मुगल साम्राज्य कमजोर होने लगा था।

उत्तर-मुगल काल और झारखंड

- 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद, मुगल साम्राज्य का पतन शुरू हो गया। उस समय, राम शाह कोकरा क्षेत्र के शासक थे। 1715 में, यदुनाथ शाह (एक नागवंशी शासक) उनके उत्तराधिकारी बने और एक शक्तिशाली शासक के रूप में उभरे। उन्होंने मुगल साम्राज्य के सूबेदार सरबुलंद खान को एक लाख रुपये का नजराना दिया और अपनी राजधानी को दोयसा से पालकोट स्थानांतरित कर दिया।

- यदुनाथ शाह की मृत्यु 1724 में हुई और शिवनाथ शाह उनके उत्तराधिकारी बने। 1733 में शिवनाथ शाह की मृत्यु के बाद, उदयनाथ शाह शासक बने। उनके बाद उनके छोटे भाई श्याम सुंदर नाथ शाह सिंहासन पर बैठे, लेकिन उनका शासन केवल पाँच वर्षों तक रहा।
- औरंगजेब के अंतिम काल और उसके बाद (1667-1724) के दौरान, रामगढ़ पर दलेल सिंह का शासन था। 1718 में, दलेल सिंह ने चाय के शासक मगर खान को हराया और मार दिया, और उस क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया। चाय 1718 से 1724 तक उनके नियंत्रण में रहा। 1719 में, उन्होंने पलामू के शासक रंजीत सिंह को नागवंशी शासकों से टोरी परगना छीनने में मदद की।
- 1724 में, दलेल सिंह चाय के शासक से हार गए और फलस्वरूप, मगर खान के पुत्र रनबस्त खान ने खोए हुए क्षेत्रों को वापस पा लिया। दलेल सिंह की मृत्यु 1732 में हुई और विष्णु सिंह उनके उत्तराधिकारी बने।
- 1741 ईस्वी में, मराठों ने झारखंड पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। ऐसा माना जाता है कि सरगुजा, छोटा नागपुर और सिंहभूम के शासकों ने उन्हें कर देना शुरू कर दिया था। मराठा आक्रमणों से पलामू, छोटा नागपुर और मानभूम जैसे क्षेत्रों के सामाजिक और आर्थिक जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। इसके बाद, 1767 में अंग्रेजों ने भी सिंहभूम क्षेत्र में प्रवेश किया।

Toppersnotes
Unleash the topper in you